संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हों। यहाँ सभी रोज़ ऑफ़ शेरोन चर्च के सदस्यों और मसीह में मेरे सभी भाइयों और बहनों को, क्रिसमस की बधाई और एक धन्य और समृद्ध नया साल! आने वाला वर्ष फलदायी हो, और सभी अपने जीवन के संबंधित चरणों में प्रभु के शक्तिशाली आशीर्वाद का अनुभव करें!

यूहन्ना 1:14 ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।'' परमेश्वर देह में प्रकट हुए और आत्मा में धर्मी ठहराए गए। वह अन्यजातियों के लिए प्रचार किए गए थे जो विश्वास करते थे, महिमा में प्राप्त किए गए थे, और वह इस दुनिया में हमारे साथ 'जीवित वचन' के माध्यम से रहते है। जब हम इस सच्चाई को जानते हैं, कि यीशु जीवित वचन है, तो हमें हमारे सभी पापों से बचाया जाएगा। आश्चर्य नहीं है कि शैतान इस सच्चाई को जानता है, और इसलिए वह 'जीवित वचन' से हमारा ध्यान हटाकर हमें यीशु से दूर रखने की पूरी कोशिश करता है। यीशु, इस दुनिया में हमें अपने पिता परमेश्वर की महिमा दिखाने के लिए आएं थे, और वह पवित्र बाइबिल में जीवित वचनों के माध्यम से हमसे बात करते है!

आज हमारे लिए क्रिसमस का सही अर्थ जानना जरूरी है यानी, यीशु मसीह हमारे साथ रहने के लिए इस दुनिया में आए; न केवल कुछ समय के लिए बल्कि हमेशा के लिए। इसलिए, हम क्रिस्ती इस सत्य में आनन्दित हो सकते हैं कि स्वर्ग और पृथ्वी को बनाने वाले प्रभु, जो ऊपर स्वर्ग में रहते हैं, राजाओं के राजा, हमारे लिए इस दुनिया में आए। कोई भी मनुष्य परमेश्वर की महिमा को नहीं देख सका; इसलिए यीशु को धरती पर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के लिए भेजा गया ताकि हम बचाए जा सकें।

यशायाह 9:6 ''क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।'' नबी यशायाह ने यीशु मसीह के आने के बारे में भविष्यवाणी की थी, यीशु के दुनिया में पैदा होने से बहुत पहले। क्रिस्त का अर्थ है 'उद्धारकर्ता' और इम्मानुएल का अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ।' हमारा परमेश्वर अच्छा, शक्तिशाली और सर्वोच्च है; और जो स्वर्गीय राज्य में रहते है, वह आपके और मेरे लिये इस जगत में भेजे गए थे ।

इस क्रिसमस, आइए हम अपने दिलों और प्राणों के दरवाजे खोलें ताकि यीशु मसीह प्रवेश कर सकें। वह इंतजार कर रहें है और आज हमारे दिलों पर दस्तक दे रहें है। दाऊद का अनुभव कहता है भजन संहिता 139:17–18 में ''मेरे लिये तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है! यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूँ, तब भी तेरे संग रहता हूँ।'' अपने जीवन में भी हमें दाऊद की तरह इसका अनुभव करना चाहिए; हमें अपने आशिषों को एक–एक करके गिनना चाहिए, क्योंकि वे हमारे जीवन में अनगिनत हैं।

हमारे जीवन में 'क्रिसमस' का सही अर्थ पिता परमेश्वर, उनके पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा की उपस्थिति है! तो, इस क्रिसमस, आइए हम अपने दिलों को खोलें और अपने–अपने जीवन में उनकी उपस्थिति का स्वागत करें ताकि हम और हमारे परिवार आशीषित हों!

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

यीशु स्वर्ग की कुंजी।

यशायाह 22:22 ''मैं दाऊद के घराने की कुंजी उसके कंधे पर रखूँगा, और वह खोलेगा और कोई बन्द न कर सकेगा; वह बन्द करेगा और कोई खोल न सकेगा।'' हमारे घरों और परिवार में खुशी और शांति के लिए, प्रभु ने कहा, ''मैं दाऊद के घर की चाबियाँ तुम्हारे कंधे पर रखूंगा''। इस प्रकार, यह प्रभु की इच्छा है कि हम उनसे आशीष प्राप्त करें और एक फलदायी और धन्य जीवन जिएं। हम नए करार में पढ़ते हैं, मत्ती 1:22 ''यह सब इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो:'' अब हम समझ सकते हैं कि परमेश्वर क्यों कहते है कि दाऊद के घर की चाबियां आपको दी गई हैं, क्योंकि जिसे परमेश्वर बंद करते है उसे कोई खोल नहीं सकता, जिसे परमेश्वर खोलते है उसे कोई बंद नहीं कर सकता। आइए हम पढ़े प्रकाशितवाक्य 22:16 ''मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद का मूल और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूँ।" दाऊद की जड़ यीशु मसीह है, जो भोर का चमकता हुआ तारा है। प्रकाशितवाक्य 3:7 कहता है ''फिलदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख: जो पवित्र और सत्य है, और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है कि'' यीशु मसीह दाऊद की जड़ से आये थे, इस प्रकार परमेश्वर हमें दाऊद के घराने की कुंजी देना चाहते है। इस धरती पर हजारों धर्मी और पवित्र लोग हैं। परन्तु क्या कारण है कि परमेश्वर दाऊद के घराने से प्रेम रखते है? क्योंकि दाऊद यहोवा परमेश्वर के लिये एक पवित्र मन्दिर बनाना चाहता था, इसलिये परमेश्वर ने हमें दाऊद के घर की चाबी देने की इच्छा की। हम जानते हैं कि जहां एक पवित्र मंदिर है, वहां प्रभु परमेश्वर की स्तुति, आराधना और आदर होता है, बदले में उस स्थान पर प्रभु का अभिषेक और आशीष होता है। दाऊद ने परमेश्वर को एक पवित्र मंदिर बनाने की अपनी इच्छा को जाहिर किया। आइए हम पढ़ें 1 इतिहास 17:25 में ''क्योंकि हे मेरे परमेश्वर, तू ने यह कहकर अपने दास पर प्रगट किया है कि मैं तेरा घर बनाए रखूँगा, इस कारण तेरे दास को तेरे सम्मुख प्रार्थना करने का हियाव हुआ है।'' दाऊद में इस महान इच्छा को देखकर, परमेश्वर ने उससे कहा, ''मैं तुम्हें एक घर बनाऊंगा''। इस प्रकार आज यहोवा परमेश्वर हम से कहते है कि वह दाऊद के घराने की चाबी हमारे कन्धे पर रखेंगे। इस प्रकार, यह कुंजी कौन है? यीशु मसीह कुंजी है। याद रखें, जहां यीशु मसीह रहते हैं, वहां आनंद, शांति और खुशी है। जैसा कि हम मत्ती 1:22 में पढ़ते हैंए ''यह सब इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो:''

परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को हमारे लिए इस धरती पर भेजा है। यीशु इस दुनिया में आएं और पिता परमेश्वर की इच्छा के अनुसार किया। हर घर में सुख, शांति, अच्छे स्वास्थ्य का आसिष दिया। यीशु ने उपदेश दिया, ''जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। उन्होंने लोगों को जीवन की सच्चाई सिखाई।'' परन्तु फरीसियों और सदूकियों ने उसका अनुसरण किया, ताकि उनकी सेवकाई और उपदेश को रोका जा सके। वे यीशु मसीह द्वारा किए गए चमत्कारों को समाप्त करना चाहते थे। लेकिन, यीशु किसी से नहीं डरते थे, उन्होंने इस धरती पर अपना काम जारी रखा, उन्होंने अपने पिता की इच्छा को पूरा करना जारी रखा। यीशु ने अपने साथ काम करने के लिए 12 शिष्यों को चुना, उन्होंने अपनी सेवकाई को दूर–दूर तक फैलाने के लिए, साथ–साथ काम करने के लिए कई लोगों को चुना। हालाँकि उनके अपने परिवार ने उनसे सवाल किया, जिस पर यीशु ने कहा, ''मेरी माता और मेरे भाई कौन हैं?'' "देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। क्योंकि जो कोई परमेश्वर का वचन सुने, वही मेरा भाई, और बहिन, और माता है।'' उस समय भी, यीशु मसीह का एकमात्र उद्देश्य उन कार्यों को पूरा करना था जिनके लिए स्वर्ग में उनके पिता ने उन्हें इस दुनिया में भेजा था। जिस समय यीशु को पकड़ा गया और क्रूस पर चढ़ाया गया, जब यीशु ने इतना दर्द, दु:ख और लज्जा उठाई, लोग उनके चेहरे पर थूकते रहे, उनके शरीर को कोड़े मारे और उन्हें अपमानित किया। उस समय भी यीशु ने केवल यही सोचा था कि उन्हें वह कार्य पूरा करना

है जिसके लिए उनके पिता ने उन्हें इस संसार में भेजा था। लोगों ने सोचा कि अगर उन्हें कम से कम अपने जीवन के अंत में कष्टों से गुजरना पड़ा तो वह अपने पिता परमेश्वर का इन्कार कर देंगे और हार मान लेंगे! लेकिन नहीं, हमारे प्रभु यीशु ने इस दुनिया को अंत तक खुद को हारने नहीं दिया, उन्होंने सभी दर्द और दुखों को अपनी मर्जी से सहन किया और अंत में शैतान की योजना पर विजय प्राप्त की। हमें याद रखना चाहिए, कि शैतान आज भी उसी तरह से काम कर रहा है, उन लोगों के जीवन में जिन्हें क्रूस उठाने के लिए बुलाया गया है। क्योंकि शैतान सोचता है, हम थक जाएंगे और दर्द और दुख से पीड़ित होने पर प्रभु की सेवा छोड़ देंगे। परन्तु स्मरण रहे, परमेश्वर ने दाऊद के घराने की चाभी हमारे कन्धे पर रखी है। यह सच्चाई है कि चुने हुए लोगों को विश्वास करना चाहिए और यीशु पर अपना विश्वास और भरोसा रखना चाहिए। इस दुनिया में ऐसा कोई प्रेम नहीं है जो हमें प्रभु से दूर ले जा सके, यह निर्णय हमारे दिलों में पक्का होना चाहिए। याद रखें, दरवाजे का हैंडल हमारे भीतर है, हमारे दिलों में, हमें ही इसे खोलने और बंद करने की जरूरत है। इस प्रकार यीशु कहते हैं, ''जिस द्वार को मैं ने बन्द किया है, वह कोई खोल नहीं सकता और जो द्वार मैं ने खोला है, वह कोई बन्द नहीं कर सकता''।

पुराने करार में, हमने देखा है कि बहुत से विश्वासी, धर्मी और परमेश्वर से डरने वाले लोग थे। उनमें से, परमेश्वर ने दाऊद को चुना, जो इस्राएल पर शासन करने के लिए एक साधारण चरवाहा लड़का था। दाऊद परमेश्वर से बहुत प्रेम करता था और उसके हृदय में परमेश्वर का एक विशेष स्थान था। उन्होंने अपने जीवन में प्रभु का सम्मान किया और अपना पूरा विश्वास और भरोसा केवल प्रभु में रखा। आइए हम आगे पढ़ें 1 इतिहास 17:27 में ''और अब तू ने प्रसन्न होकर, अपने दास के घराने पर ऐसी आशीष दी है, कि वह तेरे सम्मुख सदा बना रहे, क्योंकि हे यहोवा, तू आशीष दे चुका है, इसलिये वह सदा आशीषित बना रहे।'' हम यहाँ देखते हैं कि दाऊद खुशी–खुशी यह कहता है। जिस परिवार में परमेश्वर दाऊद के घर की चाबी उनके कंधे पर रखते है, वह परिवार बदल जाएगा और धन्य हो जाएगा जैसा कि हम भजन संहिता 128:2–3 में पढ़ते हैं ''तू अपनी कमाई को निश्चय खाने पाएगा; तू धन्य होगा, और तेरा भला ही होगा। तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी; तेरी मेज़ के चारों ओर तेरे बालक जलपाई के पौधे से होंगे।'' वह परिवार समृद्ध होगा और प्रभु के लिए फलदायी होगा। दाख की बारी में बेल की लता सदा भरी हुई और फलदायी रहेगी। दाऊद के घराने की चाबी पाने के लिए, हमें यहोवा परमेश्वर के मार्गों पर चलने का प्रयास करना चाहिए। जो कुछ हम केवल उसकी इच्छा के अनुसार करते हैं, उसमें हमें परमेश्वर यहोवा का आज्ञाकारी होना चाहिए। बलिदान से अधिक, यह आज्ञाकारिता है जो परमेश्वर हमसे चाहता है। कोई व्यक्ति कब बलिदान करता है, पाप करने के बाद वे प्रभु को बलिदान चढ़ाते हैं। लेकिन प्रभु कहते हैं ''आज्ञाकारिता बलिदान से बेहतर है''। जब कोई व्यक्ति अवज्ञाकारी होता है, तो उसके जीवन में पाप प्रवेश करता है, जब पाप प्रवेश करता है तो वह पाप से क्षमा पाने के लिए बलिदान करता है। इस प्रकार, परमेश्वर बलिदान के प्रति आज्ञाकारिता को प्यार करते है। हम जो चाहते हैं उसे करने के बजाय हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए और उसे पूरा करना चाहिए जो परमेश्वर हमारे जीवन में चाहते है। हमें अपने जीवन में हमेशा प्रभु की इच्छा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जब परमेश्वर का आशीर्वाद हम पर होगा, तो हमारा जीवन फलदायी होगा और यह हमारे जीवन और कार्य में प्रतिबिम्बित होगा। हमें जरूरतमंदों और बीमारों के लिए प्रार्थना करके, जिन्हें हमारे समर्थन की आवश्यकता है, उनकी मदद करके, इस दुनिया में परमेश्वर के कार्य के बोझ को साझा करना सीखना चाहिए। तब दाऊद के घराने की चाबी हमारे कन्धे पर रखी जाएगी। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने परिवारों को सुधारे और चीजों को पहले स्थान पर ठीक करें, इस दुनिया में गपशप नहीं। हमें याद रखना चाहिए कि प्रभु अपनी पूरी सृष्टि के प्रति सचेत हैं, इसलिए हमें इस दुनिया की परवाह नहीं करनी चाहिए और उनके बारे में गपशप नहीं करनी चाहिए, प्रभु उनसे हिसाब लेने के लिए हैं। वचन कहता है ''दीवारें राजा को सुनेंगी और सूचित करेंगी'', इस प्रकार दो विश्वासियों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे मिलें और अपना बोझ साझा करें और इस दुनिया के बारे में गपशप करने के बजाय एक दूसरे की मदद करें। परमेश्वर चाहते है कि हम दूसरों को

दिलासा दें और एक दूसरे को ऊपर उठाएं, गपशप नहीं। हमें दाऊद के घराने की कुंजी प्राप्त करने के लिए, हम साधारण लोग नहीं हैं, हम परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं और हमें यीशु मसीह का उपहार दिया गया है। यह कीमती और पवित्र कुंजी ऊपर के स्वर्ग से भेजी जाती है, इस कुंजी ने हमारे पापों के लिए क्रूस को उठाया है और छह घंटे तक क्रूस पर पीड़ित रहा है। फिर भी, तीसरे दिन के बाद यह कुंजी फिर से जी उठा, हमें अनन्त जीवन देने के लिए। इसलिए हमें याद रखना चाहिए कि कोई भी इस कीमती चाबी की डुप्लीकेट चाबी नहीं बना सकता। इस दुनिया में, जब हम अपनी अलमारी या घर की चाबी खो देते हैं, तो एक चाबी बनाने वाला डुप्लीकेट चाबी बना सकता है। परन्तु यीशु मसीह का डुप्लीकेट कोई नहीं हो सकता है, इस प्रकार जैसा कि परमेश्वर ने मत्ती 1:22 में कहा है ''यह सब इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो :'' यीशु मसीह ही स्वर्ग और पृथ्वी पर एकमात्र कुंजी है, जो परमेश्वर ने हमें दी है।

दाऊद परमेश्वर से अत्यधिक प्रेम करता था कि वह वचन 1 इतिहास 17:1 में कहता है ''जब दाऊद अपने भवन में रहने लगा, तब दाऊद ने नातान नबी से कहा, "देख, मैं तो देवदारु के बने हुए घर में रहता हूँ, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक तम्बू में रहता है।'' दाऊद इतना बेचैन था कि वह देवदार के बने घर में तो रहता था, परन्तु परमेश्वर का सन्दूक तम्बुओं में रहता था। दाऊद हमेशा परमेश्वर के लिए एक मंदिर बनाना चाहता था। आइए पढ़ें कि दाऊद इस्राएलियों से क्या कहता है 1 इतिहास 22:14–19 में ''सुन, मैं ने अपने क्लेश के समय यहोवा के भवन के लिये एक लाख किक्कार सोना, और दस लाख किक्कार चाँदी, और पीतल और लोहा इतना इकट्ठा किया है कि बहुतायत के कारण तौल से बाहर है; और लकड़ी और पत्थर मैं ने इकट्ठे किए हैं, और तू उनको बढ़ा सकेगा। तेरे पास बहुत कारीगर हैं, अर्थात् पत्थर और लकड़ी के काटने और गढ़नेवाले वरन् सब भाँति के काम के लिये सब प्रकार के प्रवीण पुरुष हैं। सोना, चाँदी, पीतल और लोहे की तो कुछ गिनती नहीं है, अतः तू उस काम में लग जा। यहोवा तेरे संग नित रहे।" फिर दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अपने पुत्र सुलैमान की सहायता करने की आज्ञा यह कहकर दी, "क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग नहीं है? क्या उसने तुम्हें चारों ओर से विश्राम नहीं दिया? उसने तो देश के निवासियों को मेरे वश में कर दिया है; और देश यहोवा और उसकी प्रजा के सामने दबा हुआ है। अब तन मन से अपने परमेश्वर यहोवा के पास जाया करो, और जी लगाकर यहोवा परमेश्वर का पवित्रस्थान बनाना, कि तुम यहोवा की वाचा का सन्दूक और परमेश्वर के पवित्र पात्र उस भवन में लाओ जो यहोवा के नाम का बननेवाला है।'' दाऊद ने बचपन से ही यहोवा के लिए एक पवित्र मंदिर बनाने के लिए ढेर सारी चीज़ें इकट्ठी की थीं। जब वह गरीब था और उसके पास जीवन में कुछ खास नहीं था। हम में से कई लोगों के विपरीत, जो अपनी सभी जरूरतों को पूरा करने के बाद प्रभु के बारे में सोचते हैं। परन्तु दाऊद ने अपनी जवानी के दिनों से ही पवित्र मंदिर के निर्माण करने के लिए चीजें इकट्ठा करना शुरू कर दिया था। दाऊद ने इस्राएलियों से कहा, यद्यपि वह अपनी जवानी से इकट्ठा करना शुरू कर दिया था और राजा बनने के बाद, राजा शाऊल के डर में रहता था, फिर भी वह यहोवा के लिए एक पवित्र मंदिर बनाने के लिए इतना कुछ इकट्ठा करने में सक्षम था।

अब इस्राएलियों की बारी है कि वे यहोवा के लिए कुछ करें। दाऊद राजा के समय में चारों ओर बहुत सारे युद्ध और विनाश हुआ करते थे। हम शास्त्रों में पढ़ते हैं, एक बार जब अमालेकियों के साथ युद्ध हुआ, तो उन्होंने सब कुछ लूट लिया, यहाँ तक कि परिवारों की महिलाओं और बच्चों को भी ले लिया। उस समय राज्य में बहुत नुकसान हुआ था। जब दाऊद इस्राएल का राजा था, तब भी बहुत खून बहा था। परन्तु अब, परमेश्वर ने इस्राएल में शांति दी थी, इस प्रकार दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान और इस्राएलियोंको सम्मति दी, कि वे और भी बहुत कुछ कर सकेंगे, और वे यहोवा के लिए एक पवित्र मन्दिर बना सकेंगे। इस प्रकार, आप सभी के लिए प्रभु के पवित्र मंदिर को बनाना बहुत आसान हो जाएगा। वचन 16–18 कहता है ''सोना, चाँदी, पीतल और लोहे की तो कुछ गिनती नहीं है, अतः तू उस काम में लग जा। यहोवा तेरे संग नित रहे।" फिर दाऊद ने इस्राएल के सब हाकिमों को अपने पुत्र

सुलैमान की सहायता करने की आज्ञा यह कहकर दी, "क्या तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे संग नहीं है? क्या उसने तुम्हें चारों ओर से विश्राम नहीं दिया? उसने तो देश के निवासियों को मेरे वश में कर दिया है; और देश यहोवा और उसकी प्रजा के सामने दबा हुआ है।'' दाऊद ने सुलैमान के लिए परमेश्वर का एक पवित्र मंदिर बनाने के लिए सभी उपलब्धि कराई थी और उसकी सहायता और समर्थन के लिए लोगों को भी प्रदान किया था। दाऊद ने सुलैमान के लिए पवित्र मन्दिर बनाने का मार्ग बनाया। बाद में हम देखते हैं कि सुलैमान और इस्राएली यहोवा के लिए पवित्र मन्दिर का निर्माण करते हैं। सुलैमान एक बुद्धिमान और धन्य व्यक्ति था। वह अन्यजातियों से प्यार करने लगा और उनसे शादी करने लगा था जो पाप नहीं था, फिर भी उसे प्रभु का आशीष मिलता रहा। लेकिन जब सुलैमान ने अन्य देवताओं की आराधना करने के लिए उनके लिए एक मंदिर बनाया जो एक पापपूर्ण कार्य था, उस समय परमेश्वर के कोप और क्रोध का शक्तिशाली हाथ उस पर गिरा। प्रभु ने उसे छोड़ दिया।

आज हम पवित्र मंदिर हैं, हमारा शरीर प्रभु के लिए एक पवित्र मंदिर है, प्रभु के लिए हमारा शरीर कितना शुद्ध और कीमती है। क्योंकि दाऊद के हाथों पर रक्तबहाव हुआ था, परमेश्वर ने उसे अपना पवित्र मंदिर बनाने नहीं दिया। इस प्रकार, हमें कल्पना करनी चाहिए कि हमें अपने मंदिर को कितना शुद्ध और पवित्र रखना चाहिए अर्थात हमारा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है। हम ऊँचे स्वर में गा सकते हैं ''तुम नहीं जानते, तुम नहीं जानते की तुम पवित्र आत्मा के मंदिर हो"। हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें अपनी छवि में बनाया, यीशु इस दुनिया में आए, अपने पिता परमेश्वर की हर इच्छा को पूरा किया और इस दुनिया में उनकी इच्छा और योजना को पूरा किया। अंत में हमारे लिए स्वयं को क्रूस पर चढ़ा दिया। आज भी शैतान हम पर हर तरफ से अत्याचार करेगा लेकिन हमें प्रभु के लिए जीना चाहिए और अपने शरीर को प्रभु के लिए शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि यह पवित्र मंदिर है। आइए हम पढ़ें प्रकाशितवाक्य 21:3–8 ''फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं ।" जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, "देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।" फिर उसने कहा, "लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये बातें पूरी हो गई हैं। मैं अल्फा और ओमेगा, आदि और अन्त हूँ। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंतमेंत पिलाऊँगा। जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा। परन्तु डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है।" वचन में वर्णित इन सभी गुणों से हमें छुड़ाने के लिए, उन सभी से हमें विजय दिलाने के लिए यीशु क्रूस पर मरे। शैतान ने सोचा कि यदि परमेश्वर क्रूस पर पराजित हो जाता है, तो वह हम पर प्रभुता कर सकता है। लेकिन यीशु क्रूस पर मरे और हमें विजय प्रदान की, कि हम इस संसार पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होंगे, जैसे यीशु ने इस संसार पर विजय प्राप्त की। इस प्रकार हमारा शरीर प्रभु के लिए एक पवित्र मंदिर है, क्योंकि हमें प्रभु के लहू से छुटकारा मिला है। पवित्र मंदिर में स्तुति और आराधना होगी। पवित्र मंदिर में कैसे होगी स्तुति। आइए हम पढ़ें रोमियों 12:1 ''इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।'' परमेश्वर हमारे साथ रहने का वादा करते है, वह हमसे अपने शरीर को उनकी महिमा के जीवित बलिदान के रूप में रखने के लिए कहते है। प्रारंभ से ही, मनुष्य ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया और अदन की वाटिका और इस प्रकार परमेश्वर की महिमा को खो दिया। सच सच है और झूठ झूठ है। हमें झूठ को कभी नहीं छिपाना चाहिए बल्कि हमें अपने झूठ को स्वीकार करना चाहिए और उसी से छुटकारा पाना चाहिए। हमारा प्यार हमें कभी भी झूठ को सही करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए, बल्कि झूठ को सही और खुले तौर पर सजा देना चाहिए और हमारे बच्चों

और परिवार को सच्चाई के रास्ते पर लाना चाहिए। हम जानते हैं कि दाऊद ने पागल होने का अभिनय किया और यहोवा के निमित्त राजा के सामने झूठ बोला। यह परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी था। शास्त्र में हमने अय्यूब को भी देखा है, जिसने किसी बात की परवाह नहीं की, उसकी पत्नी ने कहा कि यहोवा को शाप दो और मर जाओ, लेकिन अय्यूब ने उत्तर दिया और कहा, **''मैं अपनी माँ के पेट से नंगा निकला और वहीं नंगा लौट जाऊँगा; यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया; यहोवा का नाम धन्य है।''** अय्यूब अंत तक यहोवा के लिए दृढ़ रहा, इस प्रकार यहोवा ने अय्यूब को दो गुना आशीष दिया। वचन कहता है **''जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है।''**

हमें अपने आप को पूरी तरह से प्रभु के हाथों में सौंप देना चाहिए। हम शाऊल के प्रेरित पौलुस बनने से पहले की कहानी जानते हैं। कैसे उसने परमेश्वर के लोगों को सताया और उन्हें पकड़ने का प्रयास किया। जब परमेश्वर ने आखिरकार दमिश्क के रास्ते पर उसके हृदय को प्रभु ने जकड़ा और उसे अंधा कर दिया। उस समय, शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, ''आप मुझसे क्या चाहते हो'' परमेश्वर ने उससे कहा ''अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा।'' यह शाऊल के जीवन में ज्ञान की शुरुआत थी। हमें कभी भी अपने विचारों और दिल की इच्छाओं को अपने जीवन पर हावी नहीं होने देना चाहिए। आइए हम पढ़े 1 कुरिन्थियों 3:17–23 ''यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करेगा तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो। कोई अपने आप को धोखा न दे। यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए। क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है, "वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फँसा देता है," और फिर, "प्रभु ज्ञानियों के विचारों को जानता है कि वे व्यर्थ हैं।" इसलिये मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है : क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है, 23 और तुम मसीह के हो, और मसीह परमेश्वर का है।'' अंत में पवित्र ट्रिनिटी एक है। हम तीनों पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के लिए उत्तरदायी हैं। यीशु ने कहा था कि ''तुम मुझ से अधिक शक्तिशाली काम करोगे, क्योंकि आज तुम्हारे भीतर पवित्र ट्रिनिटी है।'' हमारा उद्धारकर्ता शक्तिशाली है, इस प्रकार हमारी आशीषें भी जीवन में अपार हैं। उसी समय, हमारे शरीर को प्रभु के लिए एक जीवित बलिदान रखने के लिए, हमारे शरीर को प्रभु के लिए एक पवित्र मंदिर रखने के लिए हमें प्रभु से अधिक सुधार मिलेगा। आइए हम पढ़ें इफिसियों 2:21 ''जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है,'' हम जानते हैं कि जब परमेश्वर दाऊद के घर की चाबियां हमारे कंधे पर रखेंगे, तो हमारा जीवन और भी अधिक धन्य हो जाएगा।

मत्ती 16:19 कहता है ''मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।'' परमेश्वर अंत में कहते हैं, ''जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।'' कुछ खोए बिना हम प्रभु से कुछ हासिल नहीं कर सकते, हमें अपना जीवन पूरी तरह से परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए और उसकी इच्छा और योजना के अनुसार अपना जीवन जीना चाहिए। आइए हम अपने आप को उस स्थिति में न रखें कि प्रभु हमें कहें की ''मैं तुम्हे नहीं जानता।'' हम चिल्ला सकते हैं ''प्रभु... प्रभु... प्रभु'' लेकिन हमारे लिए दरवाजा बंद हो जाएगा और प्रभु कहेंगे ''मैं तुम्हे नहीं जानता।'' हमारा जीवन कभी आसान नहीं होगा, यह कठिन और कठिन होता जाएगा। लेकिन हमें प्रभु के लिए अपनी लड़ाई कभी नहीं छोड़नी चाहिए, अंत में जीत केवल प्रभु की होती है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे शरीर से सभी बुरा खून बहना चाहिए, परमेश्वर का वचन हमें घाव और शुद्ध करना चाहिए। वचन सुनने और सुधार मिलने के बाद, हमारे जीवन में बदलाव आना चाहिए और प्रभु के द्वारा छुड़ाया जाना चाहिए। हमारा परमेश्वर हमें कभी नहीं त्यागेगा, यह हम ही हैं जिन्होंने उसे त्याग दिया। हमें हमेशा प्रभु के लिए 'आज्ञाकारी' होने के लिए तैयार रहना चाहिए। प्रभु ने हमें

हमारे जीवन में प्यार, खुशी, आनंद और शांति दी है। प्रभु ने कहा ''जो कोई भी मेरे पीछे आना चाहता है, वह क्रूस ले लो और मेरे पीछे हो लो''। इस प्रकार परमेश्वर पिता ने हमें इस पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली नाम दिया, यह **'यीशु'** का नाम है, इस नाम से हम सभी को बचाया गया है और हमारे जीवन में विजय प्राप्त हुई है।

यह वचन उन सभी के लिए आशीष हो जो इस संदेश को पढ़ते हैं।

पास्टर सरोजा म।